International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बागेश्वर जनपद के सीमान्त हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिकता

डॉ. कमल सिंह

इतिहास विभाग, के.के. एस.एस. प्वाईन्ट, कठायतवाडा नियर पी. जे. कॉलेज बागेश्वर, उत्तराखण्ड

सारांश

उत्तराखण्ड के सीमान्त हिमालयी क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य के रूप में विश्व विख्यात है यह क्षेत्र आदिकाल से ही तपोभूमि रही है माँ नन्दा देवी की इस भूमि में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्य हैं इस क्षेत्र को नन्दा देवी क्षेत्र भी कहा जा सकता है क्योंकि यहाँ हर घर में माँ नन्दा भगवती का मंदिर स्थापित है और प्रत्येक वर्ष नंदा भगवती की राजजात एवं छोटी–छोटी जात यात्राऐं होती है ये यात्राऐं बुग्यालों से ही होकर जाती हैं और इनके रूकने के स्थान गुफा या उडियार होता है।

हिमालय का यह क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य मन मोह युक्त है "यहाँ के हिमयुक्त शिखरों के तलहटी पर ऊची ऊची चोटियों के मध्य कटिक्षेत्र में झाड़ियों के वस्त्र हैं इनके बीच दुर्लभ औषधियां ऊगी है इन चोटियों की धार व धास के मैदानों में दिव्य गुण वाले पादप हैं जो पृथ्वी से निकलकर औषधि अपने आस– पास के परिवेश को अलोकित कर रही है" इन रमणीय स्थलों मं प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच विश्व का हर प्राणी आना चाहता है। आधुनिकीकरण के इस युग में भी इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य का महत्व कम नहीं हुआ है

यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सौन्दर्यता के कारण यहां विभिन्न देश विदेशों से पर्यटक पंहुचते हैं और इस क्षेत्र को धन्यवाद दिए वापस नहीं जाते है यहाँ अनेक ग्लेशियर हैं बुग्याल, गुफाएँ, उडियार, ताल एवं कुण्ड स्थित हैं। जो इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को और भी मनमोह युक्त कर देता है। किन्तु आज बुग्यालों में दिव्य युक्त जड़ी बूंटियों व घास का न उगना व उडियारों का टूटना इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट होने की संभावना दिन प्रतिदिन बढ़ रही है आज यहां प्रत्यक्ष रूप से पिण्डारी ग्लेशियर अपने मूल स्थान से 15 किमी पीछे होना इस बात की पुष्टि करता है। हिमालय के उच्च चोटियों के मध्य बड़े घास के मैदानों के बीच सुन्दर कुण्ड है जिसकी पूजा अर्चना यहाँ के ग्वाल, अनियाल करते हैं यहां पर इन कुण्डों से अनियाल और पशु पानी पीते है और उडियारों में रहते हैं

शब्द कुंजी– बागेश्वर, प्राकृतिक सौन्दर्य, सीमान्त हिमालय, बुग्याल, उडियार, गुफा, धौड़, ।

परिचय

उत्तराखण्ड के सीमांत हिमालय का यह क्षेत्र प्राकृतिक रूप से धन धान्य युक्त भू–भाग है यह उत्तर की ओर विशाल हिमालय की गोद में वसा यह भाग प्राकृतिक सुन्दरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है यहा के प्राकृतिक सौन्दर्य सुंदर घास के मैदान जहाँ प्राकृतिक सुन्दरता तो है ही साथ ही दिव्य युक्त पादप इन पादपों की समरता व सुगंधता इस क्षेत्र की औलोकिकता यहाँ आकर ही महसूस किया जा सकता है।

हिमालय के उच्च चोटियों के मध्य बड़े घास के मैदानों के बीच सुन्दर तालें, कुण्ड है जिसकी पूजा अर्चना यहाँ के ग्वाल, अनियाल करते हैं यहां पर इन कुण्डों से अनियाल और पशु पानी पीते है और जीवन के लिए यह दिव्य जड़ी बूटी युक्त ताल, कुण्ड दानपुर में पवित्रता के प्रतिक के रूप में पूजे जाते हैं और यहाँ इस क्षेत्र के लोकजागरों में जनश्रुति है कि है की "प्राचीन काल में ये कुण्ड देवी माँ नंदा भगवती के दर्पण के रूप में कार्य करते थे। रुप कुण्ड इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी है"[5] इन कुण्डों की पवित्रता आज भी वर्तमान समय में बनी हुई है। यहाँ के स्थानीय लोग आज भी इन कुण्डों की पूजा अर्चना प्रत्येक वर्ष तथा हिमालयी महाकुम्भ नन्दा राजजात प्रत्येक वर्ष नंदा जात के रूप में आज भी विशाल पैदल मार्ग से होते हुए पूजा अर्चना होती है के जो इस क्षेत्र में पर्यटन के साथ–साथ ऐतिहासिक धरोहर का सरंक्षण कर इसकी पवित्रता और संस्कृति को बचाये हुए हैं।

उद्देश्य

1. सीमान्त हिमालय में स्थित प्राकृतिक सैंदर्य व पर्यटन, तथा बुग्यालों, गुफाओं का ऐतिहासिक महत्व एवं इस धरोहर के महत्व का अवलोकन करना।
2. इस हिमालयी क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को पर्यटकों तक पहुचाना एवं इस क्षेत्र को रोजगार से जोड़ना तथा पलायन को रोकने का प्रयास करना।

3. बागेश्वर के प्राकृतिक धरोहरों की उपयोगिता का अध्ययन करना एवं वर्तमान में पर्यावरणीय नुकसान जलवायु परिवर्तन पर गहन अध्ययन करना ।
4. इस क्षेत्र के बुग्यालों को हो रहे नुकसान एवं इन बुग्यालों के बीच स्थित कुण्ड–तालों के सिकुडन का पता लगाना तथा इनके संरक्षण हेतु योजना बनाना।
5. सीमान्त क्षेत्र के गुफाओं की ऐतिहासिकता, दिव्यता को जानना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक विधि एवं ऐतिहासिक तथ्यों व साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन **"बागेश्वर जनपद के सीमान्त हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिकता"** में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक ऑकड़ो का प्रयोग साक्षात्कार एवं प्राचीन प्रस्तर लेखों, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व सहकारी एवं गैर सहकारी संस्थानों द्वारा जारी की गई रिर्पोटों तथा शासनादेशों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही द्वितीयक ऑकडों में बागेश्वर के प्राकृतिक सौन्दर्य से संबंधित पत्र–पत्रिकाऐं, पुस्तकें, समाचार पत्रों की सहायता ली गई है। साथ ही अध्ययन क्षेत्र को चित्र, आकृति फोटोग्राफ के माध्ययमसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

सीमांत हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य के रूप में बुग्याल (जाड़, बुग्याव) की ऐतिहासिकता

हिमालयी क्षेत्र प्राचीन काल से ही पशुपालन एवं आखेट के लिए विख्यात रहा है यहाँ ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों के मध्य बड़े–बड़े घास के मैदान जो पशुओं के लिए वरदान मानी जाती है यहाँ के स्थानीय लोग इन बुग्यालों में वर्ष में एक बार अपने पशुओं को जरुर ले जाते हैं। और इन बुग्यालों में ऊगी दिव्य जड़ी बूंटी युक्त घास से यहाँ के पशु एवं पशुपालक इन बुग्यालों में रहकर प्रसन्नचित्त होकर विचरण करते हैं। और इन क्षेत्र में इन बुग्यालों की अधिकता से सहकारी सहयोग से भी पशु पालन होता है। इन बुग्यालों को स्थानीय बोली में जाड़, बुग्याव कहते हैं। इस क्षेत्र के स्थानीय लोक जागरों में इन स्थानों की अहम भूमिका रही है और "यहां के स्थानीय हिम देवताओं का इन बुग्यालों में वास रहता है"[1] और इन्हें इन बुग्यालों से अलग नहीं किया जा सकता है यहां के लोक जागरों में इन बुग्यालों में इन हिम देवताओं की चमत्कारी दर्शन आदि यहां के स्थानीय लोगों के मुंह से सुनने को मिलता है। और "ये स्थानीय हिम देवता आम जनमानस की तरह विचरण कर लोगों से बात भी करते हैं"[2] इन बुग्यालों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है।

1. सुंदरवन धाकुडी –

"यह प्रसिद्ध बुग्याल सुंदरवन धाकुडी दानपुर के वर्तमान बागेश्वर जनपद मल्ला दानपुर में समुद्रतल से लगभग 2860 मी की ऊंचाई"[3] पर स्थित है यहाँ चीड़, बाँज, बुरांश, देवदार, भोजपत्र, रिंगाल नैर आदि के वृक्षों से घिरा यह स्थल सदाबहार हरियाली से आच्छादित रहता है इसके ऊंचे पर्वत शिखर पर स्थित घास के मैदान जिसमें अनेक पुष्प दिव्य जड़ी बूंटी युक्त पादप खिले रहते हैं। इसके परिवेश में नैर, मासी, गूगल, नैर जैसे सुगन्धित पादप उगने से "यह क्षेत्र कस्तुरी मृग का प्रिय स्थान"[4] कहलाता है। इस घास के मैदानों के मध्य दुर्लभ पक्षियों का दर्शन भी इस क्षेत्र में देखा जा सकता है। जो इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान है की विशिष्ट पहचान रही है।

इस क्षेत्र में इन बुग्यालों को धार्मिक एवं पौराणिक आधार से भी जोड़ा जाता है और इसके पवित्रता एवं सुन्दरता के लिए प्रतिवर्ष यहाँ इन बुग्यालों की पूजा अर्चना की जाती है और यहाँ के पशु पालक वर्ष में चार पाँच माह तक इन बुग्यालों में डेरा डालते हैं और अपने पशुओं के साथ यहाँ रहते हैं।यह क्षेत्र नैसर्गिक सौन्दर्यमयी होने के कारण पर्यटनों का यहाँ रहना एवं पिण्डारी ग्लेशियर को जाने में पर्यटक इस बुग्याल में रहना अधिक पसंद करते हैं और इन बुग्यालों की लोकप्रियता से वर्तमान में कुमाऊँ मण्डल विकास निगम और लोक निर्माण विभाग ने इस स्थानों पर अतिथि गृहों का निर्माण किया है।

2. शम्भू बुग्याल –

सीमांत हिमालय की तलहटी पर स्थित यह बुग्याल मल्ला दानपुर पट्टी के अंतर्गत स्थित है इस बुग्याल के रहस्य पर आधारित दानपुर में कई किंवदंति जुड़ी है यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है की "यहाँ से चीन तिब्बत को व्यापार बकरियों के माध्यम से होता था बकरियों में राशन ढोलकर व्यापार होता था हुणीया लामा"[5] की कहानी आज भी दानपुर के समडर गाँव के लोग इस क्षेत्र के बारे में बताते हैं। शम्भू बुग्याल, बोरबलडा, झारकोट समडर के उपर स्थित है इस बुग्याल में "स्वमभू देवता"[6] अर्थात शिव का वास है यहाँ पशुपालन के लिए वर्ष में चार पाँच माह तक पशु इस बुग्याल में रहते हैं। और यहां के लोक जागरों में जनश्रुति है कि "यहां से हुणिया लामा लोग व्यापार"[7] करते थे इस क्षेत्र में स्थित मां नन्दा भगवती मंदिर बदियाकोट में हुणिया का दिया जलाये जाने की प्रथा है इसलिए यह कहना उचित होगा कि यहां से हुणिया व्यापार करते होंगे और देवी के देवी के प्रति इनकी अपार आस्था रही होगी।

3. "चुफवा, रनथन, रहाली, विनायक, बुग्याल"[8] –

ये सभी बुग्याल हिरामणि ग्लेशियर के समीप है ये बुग्याल पशुपालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं इन बुग्यालों से होते हुए नामिक ग्लेशियर को भी जाया जा सकता है विचला दानपुर में जो भी नन्दा जात होती है इन बुग्यालों से होकर ही आगे जाती है धार्मिक दृष्टिकोण से ये बुग्याल महत्वपूर्ण स्थान रखते है लीती से नन्दा जात नन्दा माँ भगवती की पूजा अर्चना करने नन्दा कुण्ड के लिए भी इन बुग्यालों

से होते हुए ही जाना होता है और इन बुग्यालों में रात्रि विश्राम किया जाता है। यहां पर कई हिम देवता मंदिर भी हैं इनकी पूजा अर्चना की जाती है।

लोधूरा, किल्टोप, विनायक, चिल्टा, सिदमखान, राली, भीदर्बोई, ताला रणथण, गैव, आनर, घोड़बाद, नन्दादेवी, भूमका खरिक, रजला, कैतेला, भानप आदि प्रमुख बुग्याल दानपुर क्षेत्र में हैं जहाँ प्रतिवर्ष पशुओं के साथ अनियाल रहते हैं। और दानपुर में पशुधन की आज भी विशिष्ट पहचान सम्पूर्ण भारतवर्ष में है। इस कारण पशुधन यहाँ पशुपालन सहकारी सहयोग से होता है। इन बुग्यालों में अनियालों द्वारा एक प्रहरी के रूप में कार्य किया जाता है और स्वयं इन बुग्यालों का सरक्षंण पौध रोपड़ कार्य करके किया जाता है।

सीमांत हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य के रूप में उडियार (गुफा, धौड़) की ऐतिहासिकता –

उत्तराखण्ड का सीमांत हिमालय अनादि काल से ही ऋषि मुनियों की तपोस्थली रही है यहाँ ऋषि मुनि गुफाओं में ही अपना जीवन तप करने में लगाते थे ऋषियों की इस तपोस्थली में प्रत्येक गुफा का महत्व उनके रहस्य के रूप में दानपुर क्षेत्र के लोक जागरों, जनश्रुतियों एवं लोक कथाओं में आज भी जनसामान्य से सुनने को मिलता है। यह कहा जाता है कि "यहाँ जिस किसी ऋषि द्वारा उस स्थान पर तप किया हो वह वहां पूजनीय रूप में पूजे"[9] जाते है। इन गुफाओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है।

1. गौरी उडियार –

दानपुर के वर्तमान जनपद बागेश्वर से करीब 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गौरी उडियार नामक प्रसिद्ध गुफा है "इस गुफा को गौरी माँ के प्रतीक स्थल के रूप में वर्तमान माँ गौरी की पूजा होती है। अतीत में कई साधु–संतो की तप स्थली भी गौरी उडियार रहा है"[10] गौरी उडियार में प्राकृतिक रूप से उभरी छवियाँ पर्यटकों को बहुत लुभाती है। गौरी उडियार में ही गौरी कुण्ड भी है जहाँ पर्यटक पवित्र स्नान करते हैं।

इस क्षेत्र में भू–गर्भ, भू–संरचना और चट्टानों पर होने वाले वातावरणीय परिवर्तनों का भी अध्ययन किया जा सकता है किन्तु इस पवित्र और अद्भुत गुफा को यहाँ के स्थानीय लोग माँ गौरी के रूप में प्रतिवर्ष पूजा अर्चना करते हैं और यहाँ पर्यटन की अपार संभावना के साथ साथ पवित्र स्थान के रूप में विख्यात है। वर्तमान में गुफा के समीप शिव मंदिर भी है और प्रमुख मंदिर मां गौरी मंदिर स्थापित है इसके अतिरिक्त छोटे–छोटे मंदिर एवं मूर्तिया स्थापित की गयी है और इनकी पूजा प्रतिवर्ष की जाती है।

2. काऊ उडियार, माल्या धौड –

दानपुर क्षेत्र का यह उडियार प्राचीन काल से ही प्रसिद्द तीर्थ रूप में माना जाता है। इतिहासकारों के अनुसार दानपुर में अनेक दन्त कथाएँ प्रचिलित हैं "सुन्दरढुंगा के ऊपर एक बर्फानी चोटी कवा लेख है जो कौवों का स्वर्ग है कौवे वहां आकर ही प्राण त्यागना चाहते हैं। अगर किसी कौवे की मृत्यु अन्यंत्र होती है तो उसका साथी कौवा मृतक का एक पंख यहाँ लाकर उसे अन्य मृतकों में शामिल करता है"[11] इसलिए कहा जा सकता है कि काऊ उडियार प्राचीन काल से ही पवित्र स्थली रही है और इस क्षेत्र के लोकजागरों में जनश्रुति है कि "यहाँ ऋषि–मुनियों की तपोस्थली है। पशु पक्षियों के साथ साथ सभी मानवों के लिए भी पवित्र स्थान है"[12] और यहाँ भी यहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा पूजा अर्चना की जाती है।

बी.डी.पाण्डे के अनुसार दानपुर के लोग कहते है कि "नन्दादेवी पर्वत के पश्चिम तरफ ऊंची टीबरी हिमालय की कव्वालेख के नाम से प्रसिद्ध है जिसे कौआ उडियार"[13] के नाम से जाना जाता है। जो वर्तमान में भी है इसे "कौओं की काशी"[14] भी कहा जाता है। यह खाती गाँव के उपर स्थित है मलिया धौड़ के बायीं तरफ नन्दा कोट पर्वत है यह पर्वत भी दानपुर का पूजनीय पर्वत माना जाता है। इस क्षेत्र में मल्या धौण भी एक उड्यिार है इसका आकार छोटा है इस क्षेत्र के स्थानीय बोली में "उडियारों के छोटे रूप को द्यौड़"[15] कहा जाता है। इस स्थान पर अनेक प्रकार की चिड़ियां विचरण करती हैं इसमें एक प्रकार की चिड़िया को माल्या कहा जाता है इसी चिड़िया के नाम पर इस गुफा को मल्या द्यौड़ कहा जाता है।

3. भद्रतुंगा उडियार –

दानपुर के मल्ला दानपुर क्षेत्र में भद्रतुंगा ग्राम सूपी के पास गुफा स्थित है। यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि यह स्थल ऋषि मुनियों की तपोस्थली है यह सरयू नदी के समीप है जिस कारण यहाँ प्रतिवर्ष उपनयन संस्कार होते हैं इसी के समीप ऋषि बगड़ है और मुनियार, मुनार गाँव है जो इसकी एतिहासिकता को प्रमाणित करता है आज भी इस स्थान को पूजनीय स्थान के रूप में जाना जाता है कहा जाता है कि इस गुफा में ऋषि मुनियों के तप करने से यहाँ आज भी अखण्ड बभूती (राख) है जो यहाँ आये श्रद्धालु प्रमुख रूप से इसे लगाना नहीं भूलते और इसे लगाये बिना वापस नहीं जाते यहाँ किंवदंति है कि "यहाँ खागी बाबा रहते थे जो श्री सरयू के तप में लीन रहते थे"[16] कहा जाता है की इस स्थान पर उपनयन संस्कार करने से पुण्य मिलता है प्रतिवर्ष अप्रैल–मई में भव्य रूप से हजारों की संख्या में उपनयन "बर्तपन"[17] संस्कार होता है।

इसके अतरिक्त दानपुर में अनेक गुफाएं हैं जहाँ पर प्राचीन काल से ही ऋषि मुनि तप करते और मोक्ष प्राप्त करते इनमें प्रमुख राक्षसी उडियार जो मल्ला दानपुर सरण नामक ग्राम में स्थित है यहाँ के स्थानीय लोग यहां जाने से मना करते हैं कहा जाता है की यहाँ जाने से इस गुफा में गये व्यक्ति अधिक समय तक जीवित नहीं रहते बद्रीदत्त पाण्डे के अनुसार दानपुर कोट के किले एवं दानवपुर की संज्ञा दी है हो सकता है दानव रहने के कारण ही इस गुफा का नाम राक्षसी उडियार रहा हो किन्तु वर्तमान में इन गुफाओं के अध्यन हेतु नये शोध की आवश्यक हैं।

दानपुर में रूपखाडी उडियार दोबाड़ और ढोकटी गाँव के समीप है यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि "यहाँ ऋषि मुनि"[18] रहते थे दानपुर क्षेत्र गुफाओं के दृष्टिकोण से बड़ा ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है इस क्षेत्र में स्थित बड़े–बड़े गुफाएं वहां पर स्थित मंदिर ये मंदिर साधु–संतों के सिद्धि एवं तप के कारण पवित्र माने जाते है जो प्रतिवर्ष नन्दा जात यात्रा को पड़ाव के रूप में वर्तमान में भी प्रसिद्ध ख्याति प्राप्त है जो आज भी उल्लेखनीय स्थान बनाये हुए है।

दानपुर में इसके अतरिक्त शफू उडियार, धूरकोट उडियार, बहती उडियार ढंगाकोट उडियार व्यास गुफा भनार में भी प्रसिद्ध गुफाएँ हैं इनका पौराणिक एवं जन श्रुतियाँ आज भी दानपुर के सुदूर गाँवों में प्रत्यक्ष रूप से सुनने को मिलता है और इन उडियारों एवं गुफाओं के रहस्य मई लोकगाथाओं एवं जनश्रुतियों को सुनने के लिए वर्तमान में पलायन सबसे बड़ी समस्या यहाँ की एतिहासिकता को प्रभावित कर रही है।

परिणाम

1. सीमान्त हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य को वर्तमान में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा विश्व धरातल पर पर्यटन बढ़ने हेतु वर्ष 2021–2022 को विश्व पर्यटन दिवस के सुअवसर पर पिंडारी क्षेत्र को पर्यटन क्षेत्र घोषित किया।
2. इस क्षेत्र की प्राकृतिक सौंदर्यता एवं पर्यावरण संरक्षण को देखते हुए भारत सरकार द्वारा रिजर्व क्षेत्र घोषित किया गया है।
3. भारत सरकार प्रत्येक वर्ष जलवायु परिवर्तन को देखते हुए मौसम एवं भू वैज्ञानिकों द्वारा नये नये सर्वेक्षण कर क्षेत्र को संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।
4. समस्त संरक्षण के बाद भी इस क्षेत्र में आग लगना, एवं सीमान्त गॉवों तक यातायात हेतु मोटर मार्ग के निर्माण से पेड–पौधों को खूब काटा जा रहा है और अत्यन्त भारी मशीनों से पहाड़ो को काटा जा रहा है। साथ ही मोटर मार्ग के कटिंग के दौरान आया मलुआ, पत्थर, आदि डंपिग जॉन में न डालकर सीधे पहाड़ी से नीचे डाल जाता है जिससे कई गुफा टूट चुकी हैं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य को भी काफी नुकसान पहुच रहा है।

निष्कर्ष

बागेश्वर जनपद के सीमांत क्षेत्र बड़े–बड़े धास के मैदान जिन्हे बुग्याल कहा जाता है और उडियार जो प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मनमोहक है। और जो भी पर्यटक इस क्षेत्र में भ्रमण के लिए आता है इसके तारीफों के पुल बांधकर ही जाता है। इस हिमालयी क्षेत्र के ग्लेशियरों में जाने के लिए इन बुग्यालो की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इस क्षेत्र के बुग्याल विश्वप्रसिद्ध हैं। ऊँचे–ऊँचे पर्वतों के ऊपर बड़े–बड़े घास के मैदान जिन्हें बुग्याल कहा जाता है। इसमे ऊगे द्रव्ययुक्त पादप से पालतू पशु हस्टपुष्ट होते हैं और यहॉ पर वर्तमान में पर्यटक जाते हैं और रात्री विश्राम करते हैं। इन बुग्यालों में शम्भू, सुंन्दरवन, धाकुड़ी, चफुवा, रनथन रहाली, बिनायक, हितागैर आदि प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में उंचे–उंचे पर्वतों के बीच बड़े–बड़े गुफा एवं उडियार हैं इन्हें इस क्षेत्र में बड़ी श्रद्धा के साथ ऋषि मुनियों की तपोभूमि, तपोस्थली के रूप में देखा जाता है। इस पर और गहन शोध की आवश्यकता है और इस क्षेत्र में यह एक सीमित प्रयास है। यहाँ के गौरी उडियार और काऊ उडियार व भद्रतुंगा उडियार महत्वपूर्ण है। इन स्थानों को जाने के लिए जर्जर मार्ग बने हैं यहाँ जाने के लिए सुदृढ़ मार्ग बनाये जाने की आवश्कता है। किन्तु इस क्षेत्र में सुनियोजित विकास के अभाव तथा जंगलों में आग लगने से इन प्राकृतिक सौन्दर्यो को काफी नुकसान हो रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान हैदराबाद की जल संरक्षण अध्ययन परियोजना के अंतर्गत वैज्ञानिकों द्वारा किय गये अध्ययन में इस हिमालयी क्षेत्र दानपुर की नदियां सरयू, पिंडर, कैल, शंभू जैसी पवित्र नदियों के स्रोत, हिम ग्लेशियर प्रतिवर्ष 12 से 14 मीटर की दर से सिकुड़ रहे हैं। इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्यों का यदि समय रहते संरक्षण, संरक्षित नहीं किया गया तो इस क्षेत्र में महाविनाश हो जाएगा। और भावी जीवन समाप्त हो जाऐगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उनियाल हेमाः मानसखण्डः उत्तरा बुक्स, केशवपुरम दिल्लीः 2014।
2. शर्मा, प्रो.डी.डी. : उत्तराखण्ड के लोक देवता : अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी : 2006
3. उत्तरामैती, कल्याण सिंह रावतः उत्तराखण्ड एटलस, उत्तराखण्ड दृश्य मानचित्रावली, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, 2011
4. नेगी, एस.एस.इंडियन फॉरेस्ट्री थ्रो दि ऐजेजः पृ.स. 80 1994
5. श्री लछंम सिंह कोरंगा,–68 वर्ष साक्षात्कारः बड़ी पन्याली, शामा, कपकोट, बागेश्वर दि0 20/06/2018 समय 2
6. श्री बल्वन्त सिंह दानू ,–72 वर्ष साक्षात्कारः बदियाकोट, कपकोट, बागेश्वर दि0 25/04/2017 समय 2
7. उपरोक्त साक्षात्कार, श्री लछंम सिंह
8. श्री रतन सिंह दानू पिंडारी पर्यटक गाईड, 40,साक्षात्कार, ग्राम–बाछम, पोस्ट खाती, बागेश्वर, दि0– 15/07/2020 समय 8 पी.एम
9. उपरोक्त, श्री रतन सिंह दानू,
10. एटकिंसन ई,टी, हिमालयन गजेटियर, ग्रन्थ 1, भाग– 2, पृष्ठ–12
11. बिष्ट,डॉ. शेरसिंहः मध्य हिमालय समाज संस्कृति एवं पर्यावरणः, इण्डियन पब्लिशर्स, दिल्लीः 2003।

12. स्कन्द पुराण मानसखण्ड व्याथाकार, पाण्डेय, गोपाल दत्त, गीता प्रेस गोरखपुर, 1989
13. बद्रीदत्त, पांडेः कुमाउं का इतिहास : अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा : 1997
14. उपरोक्त
15. अमर उजाला– शनिवार पृष्ठ 4, दिनांक 23 अप्रैल– 2008
16. दयाल सिंह कुमाल्टा,–46 वर्ष साक्षात्कारः भराड़ी कपकोट, बागेश्वर दि0 20/05/2019 समय 2 पी.एम.
17. अमर उजाला – शनिवार पृष्ठ 3, दिनांक 07 अप्रैल– 2018
18. सोबन सिंह दानू, 72 वर्ष,:साक्षात्कार–ग्राम झूनी, बागेश्वर, दिनांक 07/07/2015 समय 07 पी.एम.